

**न्यायालय:-द्वितीय व्यवहार न्यायाधीश वर्ग-1, तहसील बैहर,
जिला बालाघाट (म0प्र0)
समक्ष:-दिलीप सिंह**

आर.सी.एस.ए-300007 / 2016

संस्थित दिनांक-25.02.2015

फाई. क.234503001722015

- 1- मंगलसिंह उम्र-70 वर्ष, पिता गुव्हा जाति महार साकिन केण्डाटोला,
 - 2- सुन्दरलाल उम्र-54 वर्ष, पिता गोविन्द जाति महार साकिन केण्डाटोला,
 - 3- मालतीबाई उम्र-48 वर्ष, पिता गोविन्द जाति महार साकिन केण्डाटोला,
 - 4- भूरीबाई उम्र-40 वर्ष, पिता गोविन्द जाति महार निवासी केण्डाटोला,
 - 5- वारलीबाई उम्र-70 वर्ष, गोविन्द जाति महार निवासी केण्डाटोला,
 - 6- अशोक कुमार उम्र-42 वर्ष, पिता डोमनसिंह जाति महार निवासी केण्डाटोला,
 - 7- शिवकुमार उम्र-40 वर्ष, डोमनसिंह जाति महार निवासी केण्डाटोला,
 - 8- लताबाई उम्र-35 वर्ष, पिता डोमनसिंह जाति महार निवासी केण्डाटोला,
 - 9- जैवन्ताबाई उम्र-65 वर्ष, पति डोमनसिंह जाति महार निवासी केण्डाटोला,
- सभी तहसील बिरसा, जिला बालाघाट

.....वादीगण ।

- / / विरुद्ध / / -

- 1- शोभाराम उम्र-50 वर्ष, पिता गोविन्द जाति महार साकिन केण्डाटोला तहसील बिरसा जिला बालाघाट ।
- 2- सरिता उम्र-40 वर्ष, पिता घनश्याम जाति महार साकिन देवरीमेटा तहसील बिरसा जिला बालाघाट ।
- 3- रेखा उम्र-38 वर्ष, पिता घनश्याम जाति महार निवासी देवरीमेटा तहसील बिरसा जिला बालाघाट ।
- 4- मंजू उम्र-35 वर्ष पिता घनश्याम जाति महार निवासी देवरीमेटा तहसील बिरसा जिला बालाघाट ।
- 5- यशोदा उम्र-55 वर्ष पति घनश्याम जाति महार निवासी देवरीमेटा तहसील बिरसा जिला बालाघाट
- 6- म.प्र. शासन तर्फे श्रीमान कलेक्टर महोदय बालाघाट

.....प्रतिवादीगण ।

- / / निर्णय / / -

(आज दिनांक-28/08/2017 को घोषित)

- 1- वादीगण ने यह वादपत्र स्थाई निषेधाज्ञा की घोषणा प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत किया है ।
- 2- वादीगण का वादपत्र संक्षेप में इस प्रकार है कि वादी क्र. 2 लगा. 9 एवं प्रति.क्र.1 की खानदानी भूमि एवं वादी क्र.01 के पिता की वादपत्र के पैरा-4 में उल्लेखित भूमि मौजा कैण्डाटोला प.ह.नं. 44 पुराना रा.नि.मं. मोहगांव एवं वर्तमान रा.नि.मं. बिरसा तहसील बिरसा जिला बालाघाट में स्थित थी। वादपत्र के पैरा-4 में उल्लेखित भूमि में से कुछ भूमि विक्रय होने के पश्चात् वादपत्र के पैरा-5 में

उल्लेखित सर्वे नंबरों की 10.87 एकड़ भूमि बची थी। उक्त भूमि विवादित भूमि है, जिसका उल्लेख वादपत्र के पैरा-5 में है। वादी क्र. 2 लगा. 8 के आज्ञा एवं वादी क्र. 9 के ससुर वादी क्र.01 के पिता गुह्वा की उक्त भूमि स्वअर्जित भूमि थी। गुह्वा द्वारा अपने जीवनकाल में विवादित भूमि का उसके तीनों पुत्र गोविन्द, डोमनसिंह एवं मंगलसिंह को उनके अंश के मान से $1/3$, $1/3$, $1/3$ के आधार पर रकबा 3.71, 3.71, 3.71 एकड़ भूमि बंटवारे में दी थी। गुह्वा के फौत होने के बाद वादी क्र. 2, 3, 4, 5 एवं प्रति.क्र. 1 विवादित भूमि की कास्त करने लगे थे तथा डोमनसिंह के फौत होने के पश्चात् वादी क्र. 6, 7, 8, 9 उनके पिता की भूमि पर कास्त करने लगे थे एवं आज भी वादीगण एवं प्रति.क्र. 1 संपूर्ण विवादित भूमि पर अपने-अपने हिस्से की भूमि पर कास्त करते हैं। गुह्वा द्वारा उसके जीवनकाल में उसकी पुत्री भागनबाई को कोई हिस्सा नहीं दिया था। गुह्वा अपने तीनों पुत्रों के साथ रहते हुए फौत हो गया था, किन्तु बंटवारा उपरान्त राजस्व अभिलेख दुरुस्त नहीं हुआ था। गुह्वा के फौत होने के बाद फौती दाखला में उसके तीनों पुत्रों का नाम दर्ज हुआ था।

3— वादीगण ने उनके वादपत्र में बताया है कि प्रति.क्र.2, 3, 4 के पिता एवं प्रति.क्र. 5 के पति घनश्याम ने चोरी से राजस्व अधिकारियों से मिलकर अपना नाम विवादित भूमि के राजस्व अभिलेखों में दर्ज करवा लिया था, किन्तु घनश्याम का विवादित भूमि पर कभी कोई कब्जा नहीं रहा। विवादित भूमि के राजस्व अभिलेखों में घनश्याम के नाम दर्ज होने की जानकारी वादीगण को हुई थी तो वादीगण ने प्रति.क्र. 5 के पति घनश्याम से उसका नाम निरस्त कराने के संबंध में चर्चा की थी तो घनश्याम ने 100/-रुपये के स्टाम्प पर स्वेच्छापूर्वक अपना नाम निरस्त कराने के लिए लिखापट्टी की थी कि उसका नाम विवादित भूमि पर शामिल न किया जावे। उक्त आधार पर संबंधित हल्का पटवारी एवं तहसीलदार द्वारा संशोधन क्र. 22/285 दिनांकित-31.01.2013 के द्वारा राजस्व अभिलेख में संशोधन पंजी वादीगण के पक्ष में दुरुस्त की थी। इसके बाद प्रति.क्र. 02,03,04 द्वारा अपने पिता घनश्याम के जीवनकाल में तहसीलदार बिरसा के पास आवेदनपत्र प्रस्तुत किया था कि उनके पिता घनश्याम को शराब पिलाकर उसकी ईच्छा के विरुद्ध विवादित भूमि के राजस्व अभिलेखों में फर्जी रूप से वादीगण ने अपना नाम दर्ज कराया है। इसलिए उनके पिता के नाम के साथ-साथ विवादित भूमि पर उनका नाम शामिल सही दर्ज किया जावे। जिस पर तहसीलदार बिरसा द्वारा राजस्व प्र.क्र. 94ए-6 वर्ष 2012-13 दिनांकित-30.05.2013 के द्वारा अवैध रूप से प्रति.क्र. 2 से 6 के पक्ष में नामांतरण आदेश पारित कर दिया था, जिसके विरुद्ध वादीगण द्वारा अनुविभागीय राजस्व बैहर के न्यायालय में अपील

प्रस्तुत की थी, जिसे अनुविभागीय अधिकारी बैहर ने निरस्त कर दी थी। वादीगण ने उनके वादपत्र की प्रार्थना के अनुसार उनके पक्ष में डिक्री दिये जाने का निवेदन किया है।

4— प्रकरण में प्रति.क.02 लगा 04 की ओर से वादीगण के वादपत्र का जवाब नहीं दिया गया है। प्रति.क. 06 दिनांक 10.09.2015 को एवं प्रति.क.01 दिनांक-19.08.2016 को एकपक्षीय हो गए हैं। इस कारण उनकी ओर से वादीगण के वादपत्र का जवाब नहीं दिया है।

5— वादीगण के वादपत्र के निराकरण के लिए विचारणीय प्रश्न निम्नलिखित हैं:-

1—क्या वादीगण एवं प्रति.क.01 वादपत्र के पैरा-5 में उल्लेखित विवादित भूमि के स्वामी एवं आधिपत्यधारी हैं ?

2—क्या राजस्व न्यायालय तहसीलदार बिरसा का राजस्व प्रकरण क. -94अ-6 वर्ष 2012-2013 दिनांकित-30.05.2013 वादीगण पर अबंधनीय होकर शून्य है ?

3—क्या वादीगण विवादित भूमि के संबंध में स्थाई निषेधाज्ञा प्राप्त करने के अधिकारी हैं ?

विचारणीय प्रश्न क.-1 एवं 2 का निराकरण:

6— साक्ष्य की पुनरावृत्ति न हो इस कारण दोनों विचारणीय प्रश्नों का निराकरण एक साथ किया जा रहा है।

7— वादी मंगलसिंह वा.सा.01 ने स्वयं के मुख्य परीक्षण के शपथपत्र की साक्ष्य में बताया है कि वादग्रस्त भूमि पूर्व में 11.15 एकड़ थी जिसमें से कुछ भूमि विक्रय हो जाने के बाद विवादित भूमि ख.नं.-13 रकबा 4.00 एकड़ ख. नं. 21/1 रकबा 5.49 ए., ख.नं. 27/10 रकबा 0.18, ख.नं. 27/46 रकबा 0.20 हे. कुल रकबा 10. 87 ए. मौजा केडाटोला प.ह.नं.-44, रा.नि.म. एवं तहसील बिरसा जिला बालाघाट में स्थित है। वादी के पिता ने उनके जीवनकाल में 48 वर्ष पूर्व वादी एवं उसके भाई गोविंद, डोमनसिंह को 1/3 अंश के आधार पर क्रमशः 3.71 ए., 3.71 ए., 3.71 ए भूमि बंटवारे में दी थी तब से वादी एवं उसके दोनो भाई बंटवारे में प्राप्त उनके हिस्से की भूमि पर कास्त करते थे। वादी के पिता द्वारा उनकी पुत्री भागनबाई का हिस्सा नहीं दिया था। उसकी शादी हो गई थी और वह उसके ससुराल ग्राम देवरीमेटा चली गयी थी। विवादग्रस्त भूमि पर वादी क.-01 के पिता ने अपने पास कोई हिस्सा नहीं रखा था। विवादग्रस्त भूमि का विभाजन होने के बाद बंटवारे के अनुसार रिकार्ड दुरुस्त नहीं हो पाया था। वादी क.01 के पिता की मृत्यु के बाद

फौती दाखिला में वादी क्र.-1 एवं उसके मृतक दोनों भाईयों के नाम शामिल सरीक में दर्ज हुए थे। विवादग्रस्त भूमि पर प्रति.क्र02 लगायत 05 के पिता तथा भागनबाई के पुत्र घनश्याम ने राजस्व अधिकारियों से मिलकर अपना नाम दर्ज करवा लिया था। वादग्रस्त भूमि पर घनश्याम का कभी कोई कब्जा नहीं रहा है। घनश्याम का नाम राजस्व अभिलेखों में दर्ज होने की जानकारी होने पर वादी क्रं01 द्वारा प्रति.क्र05 के पति घनश्याम से उसका नाम वादग्रस्त भूमि से निरस्त करने के लिए कहा था तो घनश्याम ने 100/-रुपये के स्टॉप पर स्वेच्छापूर्वक अपना नाम निरस्त करने के लिए लिखा-पढ़ी की थी। उक्त आधार पर हल्का पटवारी तहसीलदार द्वारा दिनांक 21.01.2013 को संशोधन क्र. 22/285 के अनुसार राजस्व अभिलेखों की संशोधन पंजी वादीगण के पक्ष में दुरुस्त कर दी थी। इसके उपरांत प्रति.क्र.02 लगायत 04 द्वारा उनके पिता घनश्याम के जीवनकाल में आवेदन प्रस्तुत किया था कि उनके पिता को शराब पिलाकर वादग्रस्त भूमि के राजस्व अभिलेख में उनके पिता का नाम उनकी ईच्छा के विरुद्ध विलोपित कराने के लिए स्टॉप पत्र फर्जी रूप से संपादित करवाया गया था। इस कारण प्रति.क्र.02 लगा. 04 के पिता घनश्याम के नाम के साथ उसके जीवनकाल में विवादित भूमि के राजस्व अभिलेख में वादीगण के नाम के साथ शामिल सरीक रूप से नाम दर्ज किये जाने का कहा था। जिसके आधार पर तहसीलदार बिरसा द्वारा राजस्व प्रकरण क्र. 94अ-6-2012-13 में दिनांक 30.05. 2013 को वादीगण द्वारा की गयी विधिक आपत्ति को नहीं मानते हुए अवैध रूप से प्रति.क्र02 लगायत 05 के पक्ष में नामांतरण आदेश पारित कर दिया था। उसके उपरांत वादीगण ने तहसीलदार के आदेश के विरुद्ध अनुविभागीय अधिकारी बैहर के समक्ष अपील प्रस्तुत की थी। जिसे अनुविभागीय अधिकारी बैहर द्वारा मियाद से बाहर बताकर अपील निरस्त कर दी थी। वादीगण की इस साक्ष्य का समर्थन सुन्दरलाल वा.सा.6 ने उसके शपथपत्र की साक्ष्य में किया है।

8— अंतराम पटले वा.सा.2, श्यामसिंह वा.सा.3, कमल चौधरी वा.सा.4 ने उनके शपथपत्र की साक्ष्य में मंगलसिंह वा.सा.1 की साक्ष्य का समर्थन करते हुए बताया है कि भागनबाई की मृत्यु हो गई है। विवादित भूमि पर भागनबाई का कभी कोई कब्जा नहीं रहा है एवं भागनबाई के पुत्र घनश्याम के वारसान प्रति.क्र.02 लगायत 05 का भी कभी कोई कब्जा नहीं रहा है। वादीगण ने दस्तावेजी साक्ष्य में वादग्रस्त भूमि के खसरा पांचसाला वर्ष 2012-13 की सत्य प्रतिलिपि प्र.पी.01, प्र.पी.02, वादग्रस्त भूमि के वर्ष 1983 से 1987-88 तक के खसरा की सत्य प्रतिलिपि प्र.पी.03, प्रति.क्र.02 लगायत 04 के पिता एवं प्रति.क्र.05 के पति घनश्याम द्वारा लिखे गए सहमति पत्र की सत्य प्रतिलिपि प्र.पी.04, विवादित भूमि के

अधिकार अभिलेख वर्ष 1954-55 की सत्य प्रतिलिपि प्र.पी.05, विवादित भूमि के खसरा वर्ष 1994-98 की सत्य प्रतिलिपि प्र.पी.06, विवादित भूमि की संशोधन पंजी क्र 15/171 दिनांक 20.05.1989 की सत्य प्रतिलिपि प्र.पी.07, वादग्रस्त भूमि का राजस्व प्र.क्र. 94ए/6 वर्ष 2012-13 तहसीलदार बिरसा द्वारा पारित आदेश दिनांक 30.05.2013 की सत्य प्रतिलिपि प्र.पी.08 प्रस्तुत की है।

9— प्रकरण में वादीगण द्वारा प्रस्तुत किये गए प्रदर्श पी-3 के खसरा पांचसाला प्रदर्श पी-5 के अधिकार अभिलेख प्रदर्श पी-6 के खसरा पांचसाला से यह दर्शित है कि विवादग्रस्त भूमि वादी क्र.01 एवं उसके मृतक भाई डोमनसिंह एवं गोविन्द की पैतृक भूमि है। वादी क्र.01 का मृतक भाई डोमनसिंह वादी क्र. 06,07,08 का पिता एवं प्रति.क्र.09 का पति था। वादी क्र.01 का मृतक भाई गोविन्द वादी क्र.02 लगायत 03 एवं प्रति.क्र.01 का पिता था एवं वादी क्र.05 का पति था। विवादग्रस्त भूमि पर प्रदर्श पी-9 की संशोधन पंजी के द्वारा वादी क्र.-1 की बहन भागनबाई के पुत्र घनश्याम ने राजस्व अधिकारियों से मिलकर अपना नाम भी दर्ज करा लिया था। उक्त संशोधन पंजी में भागनबाई को फौत होना बताया था, परंतु वादपत्र के पैरा-3 के खानदानी सिजरा में भागनबाई का फौत होना नहीं लिखा है। वादी क्र.-1 की बहन भागनबाई ने उसके जीवनकाल में विवादग्रस्त भूमि पर अपना नाम दर्ज करने की कोई कार्यवाही नहीं की थी। वादी क्र.01 के भांजे घनश्याम ने प्रदर्श पी-3 के सहमतिपत्र के द्वारा विवादग्रस्त भूमि ख.नं.-13 रकबा 1.619 हे., ख.नं.-21/1 रकबा 2.627 हे., ख.नं.-27/10 रकबा 0.062 हे., ख.नं.-27/46 रकबा 0.081 हे. भूमि का वादी क्र.01, 02, 06, 07 एवं वादी क्र.01 के पुत्र चेतन वाहने के पक्ष में हक त्यागा था। उक्त सहमतिपत्र के आधार पर प्रदर्श पी-11 की संशोधन पंजी में प्रदर्श पी-4 के सहमतिपत्र में उल्लेखित विवादग्रस्त भूमि पर से घनश्याम का नाम पृथक किया गया था एवं विवादित भूमि पर वादी क्र.01 लगा. 09 के नाम दर्ज किये थे। प्रदर्श पी-11 की संशोधन पंजी में उल्लेखित भूमि का विवरण प्रदर्श पी-1 एवं प्रदर्श पी-2 के खसरा पांचसाला में है।

10— प्रकरण की विवादग्रस्त भूमि के संबंध में घनश्याम की वारसान पुत्री सरिता, रेखा, मंजू द्वारा यह आवेदन प्रस्तुत किये जाने पर कि उनके पिता से शराब के नशे में सहमतिपत्र लिखाया गया था। घनश्याम की वारसान ने सहमतिपत्र में उल्लेखित विवादग्रस्त भूमि पर उनके पिता के साथ अपना नाम शामिल करने के संबंध में आवेदन प्रस्तुत किया था। उक्त आवेदन के आधार पर तहसीलदार बिरसा द्वारा राजस्व प्रकरण क्र.-94ए/6 वर्ष 2012-13 आदेश दिनांक-30.05.2013 के द्वारा घनश्याम के जीवनकाल में उसकी पुत्रियों का नाम

दर्ज करने का आदेश दिया था। उक्त आदेश प्रदर्श पी-8 है। उक्त आदेश के विरुद्ध वादीगण की ओर से अनुविभागीय अधिकारी बैहर के समक्ष अपील प्रस्तुत हुई थी, उक्त अपील अनुविभागीय अधिकारी बैहर के न्यायालय से अवधि बाह्य निरस्त हो गई थी। घनश्याम के वारसान ने उसके जीवनकाल में प्रदर्श पी-4 के सहमतिपत्र में उल्लेखित विवादग्रस्त भूमि अपने नाम पर दर्ज करा ली है एवं घनश्याम ने उसकी माँ के नाम पर भूमि होने से पूर्व अपने नाम पर प्रदर्श पी-4 के सहमतिपत्र में उल्लेखित भूमि राजस्व अधिकारियों से मिलकर करा ली थी, प्रदर्श पी-4 के सहमतिपत्र में उल्लेखित विवादग्रस्त भूमि अपने नाम पर उसकी माँ के नाम पर होने से पूर्व कराने का अधिकार घनश्याम को नहीं था एवं विवादग्रस्त भूमि वादीगण की पैतृक भूमि थी। उस पर उनका भी हिस्सा था। इसके उपरान्त भी घनश्याम ने वादीगण की पैतृक भूमि अपने नाम पर दर्ज करा ली थी। जबकि घनश्याम को वादीगण के हिस्से की भूमि अपने नाम पर कराने का कोई अधिकार नहीं था। इस कारण तहसीलदार बिरसा का राजस्व प्रकरण क्र. -94ए/6 वर्ष 2012-13 आदेश दिनांक-30.05.2013 वादीगण पर अबंधनीय है एवं विवादग्रस्त भूमि वादीगण की पैतृक भूमि होने के कारण वादीगण विवादित भूमि के स्वामी एवं आधिपत्यधारी हैं। प्रति.क्र.01 शोभाराम मृतक गोविंद का पुत्र है। प्रति. क्र.01 शोभाराम की ओर से कोई प्रतिदावा प्रस्तुत नहीं किया है। इस कारण प्रति. क्र.01 शोभाराम को विवादित भूमि का स्वामी एवं आधिपत्यधारी नहीं माना जाता है।

विचारणीय प्रश्न क्र.-03 का निराकरण

11- प्रकरण में वादीगण द्वारा प्रस्तुत प्रदर्श पी-11 की संशोधन पंजी से विवादित भूमि पर वादीगण के नाम स्वामी एवं आधिपत्यधारी के रूप में दर्ज हुए हैं एवं घनश्याम ने प्रदर्श पी-4 का सहमतिपत्र देकर उक्त संशोधन पंजी के द्वारा विवादग्रस्त भूमि पर अपना हक त्याग दिया है, इस कारण विवादग्रस्त भूमि पर वादीगण के नाम पर स्वामी एवं आधिपत्यधारी के रूप में दर्ज हुए थे। विवादग्रस्त भूमि वादीगण की पैतृक भूमि है। वादग्रस्त भूमि पर घनश्याम के वारसान ने उसकी मृत्यु होने से पूर्व अपने नाम तहसीलदार बिरसा के राजस्व प्रकरण क्र. -94ए/6 वर्ष 2012-13 आदेश दिनांक-30.05.2013 से दर्ज करा लिये थे। उक्त आदेश विचारणीय प्रश्न क्र.-1 व 2 में वादीगण पर अबंधनीय माना गया है, इस कारण प्रति.क्र.02 लगायत 5 को वादीगण की पैतृक वादग्रस्त भूमि पर हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। प्रति.क्र.02 लगायत 05 को वादीगण की वादग्रस्त भूमि पर अवैध रूप से हस्तक्षेप करने से रोका जाना आवश्यक है।

12— प्रकरण की उपरोक्त विवेचना में वादीगण विवादित भूमि ख.नं-13 रकबा 4.00 एकड़, ख.नं-21/1 रकबा 6.49 एकड़, ख.नं-27/10 रकबा 0.18 एकड़, ख.नं-27/46 रकबा 0.20 एकड़ भूमि मौजा कैण्डाटोला प.ह.नं-44 रा.नि.मं. बिरसा तहसील बिरसा जिला बालाघाट की भूमि के संबंध में प्रति.क्र.02 लगायत 05 के विरुद्ध अपना वाद प्रमाणित करने में सफल रहें हैं। अतः वादीगण का वादपत्र स्वीकार किया जाकर निम्न आशय की डिक्री पारित की जाती है:-

- (1) यह घोषित किया जाता है कि वादीगण भूमि ख.नं-13 रकबा 4.00 एकड़, ख.नं-21/1 रकबा 6.49 एकड़, ख.नं-27/10 रकबा 0.18 एकड़, ख.नं-27/46 रकबा 0.20 एकड़ भूमि मौजा कैण्डाटोला प.ह.नं-44 रा.नि.मं. बिरसा तहसील बिरसा जिला बालाघाट स्थित भूमि में से प्रति.क्र.01 के हिस्से की भूमि को छोड़कर शेष भूमि के स्वामी एवं आधिपत्यधारी हैं।
- (2) यह प्रमाणित माना जाता है कि तहसील न्यायालय बिरसा का राजस्व प्रकरण क्र.-94ए/6 वर्ष 2012-13 आदेश दिनांक-30.05.2013 वादीगण पर अबंधनीय है।
- (3) प्रतिवादीगण, वादीगण एवं स्वयं का वाद व्यय वहन करेंगे।
- (4) अभिभाषक शुल्क नियमानुसार देय होगी।

तदनुसार आज्ञाप्ति बनाई जावे।

निर्णय खुले न्यायालय में दिनांकित,
हस्ताक्षरित कर घोषित किया गया।

मेरे बोलने पर टंकित।

(दिलीप सिंह)

द्वि०व्य०न्याया० वर्ग-1, बैहर
तहसील बैहर जिला बालाघाट

(दिलीप सिंह)

द्वि०व्य०न्याया० वर्ग-1, बैहर
तहसील बैहर जिला बालाघाट